RNI MAHMAR
36829-2010

ISSN - 2229-4929

Peer Reviewed

Akshar Wangmay

International Research Journal
UGC-CARE LISTED

Folk Literature & Folk Media

FEBRUARY 2020

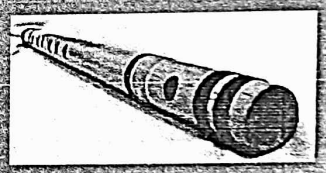

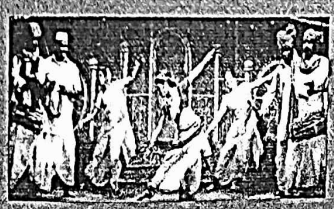

Executive Editor : Dr. Subash Nikam

Principal,
Mahatma Gandhi Vidymandir's
Karmaveer Bhausaheb Hiray
Arts, Science and Commerce College,
Nimgaon, Tal. Malegaon Dist. Nasik (MS)

Co- Editor : Prof. Arjun G. Nerkar

Chief Editor : Dr. Nanasaheb Suryawanshi

Address : 'Pranav', Rukmenagar,
Thodga Road, Ahmadpur, Dist. Latur 413515

INDEX

No.	Title of the Paper Authors	Page No.
1	लोकसाहित्य में लोकगीत डॉ. योगिता हिरे	6 - 8
2	आदिवासी लोक सांस्कृति के संदर्भ में आदिवासी जनजीवन डॉ.पंडित वन्ने	9 - 14
3	आदिवासी लोकसाहित्य और समाज जीवन डॉ. योगिता दत्तात्रय घुमरे (उशिर)	15 - 17
4	गुजरात की लोकधारा भवाई : एक संक्षिप्त अध्ययन डॉ. गीता परमार	18 - 21
5	भारतीय साहित्य : लोकसंस्कृति एवं लोकजीवन डॉ.नवनाथ गाड़ेकर	22 - 26
6	बंजारों की लोकसंस्कृति और लोकगीत प्रा.डॉ.व्ही.जी.राठोड	27 - 29
7	लोकगीत : 'जंगल के गीत' उपन्यास के विशेष संदर्भ में प्रा. हर्षल गोरख बच्छाव, डॉ.अनिता नेरे (भामरे)	30 - 34
8	लोकसाहित्य का इतिहास प्रा. डॉ. जाधव के. के.	35 -38
9	लोकसाहित्य के प्रकार डॉ. जालिंदर इंगले	39 - 41
10	लोकसाहित्य विमर्श : खानदेश की अहिराणी बोली प्रा. काळे मिनाक्षी बबनराव	42- 47
11	लोक साहित्य और फिल्म – डॉ. अनंत केदारे	48 - 52
12	लोकसाहित्य का स्वरूप एवं विकास प्रा. कैलास काशिनाथ बच्छाव	53 - 55

लोकगीत : 'जंगल के गीत' उपन्यास के विशेष संदर्भ में

प्रा. हर्षल गोरख बच्छाव
सहाय्यक प्राध्यापक, स्नातक विभाग
समाजश्री प्रशांतदादा हिरे महाविद्यालय, नामपूर, तह. बागलाण, जिला. नासिक

डॉ.अनिता नेरे (भामरे)
सहयोगी प्राध्यापक एवं शोध निर्देशिका
श्रीमती पुष्पाताई हिरे महिला महाविद्यालय, मालेगांव कैम्प, जिला.नासिक

लोकगीत लोगों के द्वारा विशेष परिस्थिति में स्थल–कर्म संस्कार के समय हुई अनुभूतियों की सामूहिक अभिव्यक्ति है । लोकगीत ही लोगों की दिनचर्या की वास्तविक भावनाओं का आलेख प्रस्तुत करता है । लोकगीतो में लोक–संस्कृति का चित्रण अवश्य दिखाई देता है । हमारे जीवन शारीरिक व्यापार जैसे भी होते है उनका यथार्थ चित्रण लोकगीतों में ही प्राप्त होता है । लोकगीतों में सामूहिक चेतना की पुकार मिलती है तथा सामाजिक क्रांतियों का दर्शन भी मिलता है । लोकगीत जीवन की प्रत्येक अवस्था में हर प्रकार से प्रेरणा ग्रहण कर भावनाओं को अभिव्यक्त करता है । लोकगीतों से अनेक लाभ है जैसे – बोझ हल्का करना, जन जागरण, ज्ञान वृध्दि, आवश्यकताओं की पूर्ती, सामान्य जनों का मनोरंजन आदि । प्रत्येक जाति या समाज के अपने गीत होते है । इन्ही के द्वारा अनेक धार्मिक, सांस्कृतिक, सामाजिक, पौराणिक अंतर कथाएँ भी बनी है ।

नालंदा विशाल शब्द सागर में गाँव, देहातों में गाये जाने वाले जन साधारण के गीत को लोकगीत[१] कहा गया है । देवेंद्र सत्यार्थी ने लोकगीतों के उद्‌गम के संदर्भ में लिखा है कि – "सारे लोकगीत जीवन के खेत में उद्‌भूत होते है । कल्पना, प्रवृत्ति, भावनाएँ और नृत्य की लयकारी में इन गीतों को फलने फूलने में सहायक होते है । जीवन के सुख–दु:ख लोकगीत के बीज है ।"[२]

लोकगीतों में पिरोये जाने वाले भावो के संबंध में लोकगीतों के विकास आदि के उपलक्ष्य में डॉ.श्याम परमार ने लोकगीत की परिभाषा इस प्रकार दी है – "लोकगीत वह धारा है जिसमें अनेक छोटी–मोटी धाराएँ मिलकर उसे सागर के समान गंभीर बना देती है । मन की विभिन्न परिस्थितियों में ताने–बाने बन जाते है । इसके माधुर्य में स्त्री–पुरुषों ने अपनी थकान मिटाई है, बूढ़ों को मन बहलाने का साधन दिया । बैरागियों को उपदेश का पान कराया, विरही युवकों के मन की कसक मिटाई है, पथिकों ने थकावट दूर की । किसानों ने खेत जोते है और मजदूरों ने विशाल भवनो पर पत्थर चढाएँ है ।"[३]

मनुष्य की सामाजिकता की भावना और संगठन के साथ लोकगीत विकसित हुए है । उत्सवों और पर्वो पर गाये जाने वाले गीत मानव की सामूहिक भावना को व्यक्त करते है । इसी प्रकार की भावना हिंदी के सुप्रसिध्द आदिवासी लेखक फादर पीटर पॉल एक्का के 'जंगल के गीत' उपन्यास मिलती हैं । इस उपन्यास में विवाह के गीत, आखेड़ के गीत, उत्सव के गीत, भादो के गीत, विदाई के गीत, नृत्य के गीत आदि लोकगीतों के माध्यम से आदिवासियों के सामाजिक एवं सांस्कृतिक जीवन के दर्शन होते हैं ।

प्रस्तुत उपन्यास आदिवासी उलगुलान के साथ–साथ आदिवासियों की संस्कृति का भी परिचायक है । इसमें युवक–युवतियॉ उत्सव पर्व पर जो आदिवासी गीत गाते हैं उसे हम निम्न रुप से विभाजित कर सकते हैं ।

१. उत्साह और उमंग के गीत :

२. उत्सव समाप्ति के गीत

३. प्रेमगीत

४. वसंत ऋतु के गीत

१. उत्साह और उमंग के गीत :

उपन्यास में तुंबा टोली का चित्रण मिलता हैं । इस तुंबा टोली के युवक–युवतियॉ उत्सव की तैयारी कर रहे हैं । उस समय वे एक–एक गीतों को गाते हैं –

झारखण्डी भाषा	**हिंदी भाषा**
खद्दी गे झंडा गड्डेरा गुचाय कोय डिंडा फेलो	खद्दी के लिए झंडा गाड़ा गया है,
बेचागे कालोत ।।	ऐ कुँवारी लड़कियों चलो नाचने कि लिए ।।
पड्री बारी झंडा गड्डेरा गुचाय कोय डिंडा पेलो	सुबह में झंडा गाड़ा गया है,
बेचागे कालोत ।।	ऐ कुँवारी लड़कियों चलो नाचने के लिए ।।[४]

टोली के युवक–युवतियॉ घर आँगन सजाने में लगे है । बांस के खुँटे गाड़े जा रहे है । झंडे लगाये जा रहे है । गोबर स घर–आँगन लिप दिया है । चेहरे खिल रहे है और बच्चे हंसते गाते जा रहे है ।

करमा, फगुना और गंदुरा वर्षो बाद गाँव लौटे है तो गाँव की अलग–अलग टोलियाँ सजने लगी । ढ़ोल बजने लगे । कुछ नाच की तैयारी करने लगे । युवक–युवतियों की टोलियाँ सज गयी और करमा, फगुना, गंदुरा को अखाडे की ओर ले जाते हैं । युवतियॉ एक लय में झुमने लगी और गाने लगती हैं ।

झारखण्डी भाषा	**हिंदी भाषा**
कादन कादन बअदी कोय पेलो	ऐ लड़की तुम जाऊँगी–जाऊँगी तो कहती हो
खेड्डुन्ता धूलिन खेतेरअय कालय ।	पैर की धूल को जरा झाडकर जाओ।।
निंग्यो निंबा केबोर कोय पेलो	ऐ लड़की तुम्हारे माँ–बाप गाली देंगे
खेड्डुन्ता धूलिन खेतेरअय कालय ।।	पैर की धूल को जरा झाड़कर जाओ।।[५]

सब युवक–युवतियॉ के साथ करमा और उसके दोस्त भी नाचने लगे । गाँव के 'मुखिया हाँडी' समारोह के एलान के बाद पूरे गाँव में उत्साह, उमंग की एक लहर फैल गयी थी ।

गाँव में युवक–युवतियों को भिन्न–भिन्न प्रकारकी जिम्मेदारी दी जाती है । उसे 'मुखिया हाँडी' समारोह कहते है । इस बार जित्तन ने 'धांगर' महतो के पद के लिए करमा का नाम सुझाया । सभी ने उसे स्वीकार किया । 'कोटवार' के पद के लिए जित्तनी के नाम को निश्चित किया तो बड़का धांगरिन के पद के लिए जित्तनी और करमी के नाम सर्व सम्मति से स्वीकार किये गये ।

महतो भाई ने शराब का घड़ा भेजा है तो कोई तंबाकु का आनंद लेने लगा तो कोई खैनी चुना माँगने लगा । सभी हँसते, गाते, खिलखिलाते पीने–बजाने लगे । लड़कियों की टोली नाचने के लिए उतावली होने लगी तो सनिचरवा ढ़ोल डिमडिमाने लगा तो करमी मीठे स्वर में गाने लगी –

झारखण्डी भाषा	**हिंदी भाषा**

झेलेर झेपेर कचरिनिम कुरया	उई दैया, देखो तो वह झेलर झपेर कपड़े में
इन्जो बारा हेलेरा लागी इन्जो बारागे	मछली पकड़ने के लिए जा रही हैं ।।(६)

जित्तनी अब करमा से उलगुलान की कहानी सुनाने को कहता है और करमा भी सबको उलगुलान की और अंग्रेजों द्वारा पकड़े जाने वाली कहानी सबको बताता है । कहानी सुनने के बाद युवक–युवतियों में बुझावल (पहलियों) की जंग छिड़ती है । उसके बाद फगुवा सबको कहानी सुनाता है । उसकी कहानी में अंग्रेजों के यहाँ आये हुए सारे अनुभव होते है । रात के समय सनिचरवा सब को नाचने के लिए आमंत्रित करता है । सब खुशी से उछलने लगे थे, सब के पाँव थिरकने लगे और जित्तनी ने मीठे स्वर में गाना शुरु किया –

झारखण्डी भाषा	हिंदी भाषा
परेता टोंगरी झरियत्ती निंदिरका	जंगल, टोंगरी, नदी नालो से भरा है
अमंग राजी अकय सुंदर रे ।	यह जन्मभुमी कितनी खूबसूरत है ।।(६)

भादो का महीना आने से पूरे पहाड़ी इलाके में मन को ललचाने वाली हरियाली छायी हुई हैं । खेत, पहाड., जंगल दूर कहीं एक अजीब, उत्साह, उमंग हिलोर लेने लगी है । करमी घर के सामनेवाली छोटे से बगान में खड़ी थी । वह कुदरुम के पौधो को निहारने लगी थी तभी फगुवा उसे बुलाने लगा –

झारखण्डी भाषा	हिंदी भाषा
गुचा भइया रे खेल ओधरा	चलो रे भाईया मांदर निकालो
गुचा बरा रे करम तारा कालोत रे	आओ चले करम काटने जायें
पुतवारी भइया खेल ओधरा	सांझ को भैया मांदर निकाला
गुचा बरा रे करम तारा कालोत रे ।।	आओ चले करम काटने जायें ।।(७)

यह सुनकर करमी और बीनको दोनों अपनी टोली का साथ देने पहुँचते हैं । फगुवा को लोगो का नेता चुनकर करम (पेड़) की डाली काटने का सम्मान दिया जाता है । सभी जंगल की ओर जाते है और एक स्वर में गाने लगे –

झारखण्डी भाषा	हिंदी भाषा
सनीम सनीम परेता नू	छोटे–छोटे जंगल में
चुवा मिंजुर चींखी दो खदियो	ऐ लड़कियों मयुर गा रहा है,
चुबा मिंजुर चींखी ।।	मयूर गा रहा है ।।(८)

२. उत्सव समाप्ति के गीत :

करमा उत्सव का समापन सारो झरिया नदी में करम को विसर्जित करने से होना था । युवक–युवतियों की टोली करम को लेकर सारो झरिया की और निकल पड़ी । पहाड़ी अंचल में करम के गीतो की अंतिम कड़ियाँ हर ओर बिखर रही थी –

झारखण्डी भाषा	हिंदी भाषा
चेरोम गा बरचा इन्नम गा काला लागी	कल ही तो आया, आज ही जा रहा है
गुचे खदो बेर खदो	चलो ऐ लड़कियो, आओ ऐ लड़कियो

नन्हैं करम काला लागी ।। हमारा करम राजा चला जा रहा है ।।[९]

नाचते गाते युवक–युवतियों की टोली सारो झारियों करीब आ गयी । फगुवा ने अपने हाथो से करम को सारो झारियों में विसर्जित कर दिया ।

३. **प्रेमगीत :**

तुंबा टोली में भेडियाँ हमेशा छोटे बच्चो की शिकार करता था । एक दिन झरियो भौजी नन्हें पुधना से बाहर हाथ धोने को कहती है, उतने में आदमखोर भेड़िया नन्हें पुधना को उठाकर जंगल में ले गया । झरियों भौंजी रोने लगी तभी फगुवा और टोली के युवक नन्हें पुधना को बचाने जंगल की ओर गये । लेकिन भेड़िया अपनी शिकार कर चुका था । झरियों भौजी दुःखी और विधवा थी । फगुवा उससे विवाह करना चाहता है यह बात सुनकर झरियो भौजी का दिल किसी सुखद स्मृतियों में गीतों की कड़ियों सा छिटकने लगा था ।

झारखण्डी भाषा	**हिंदी भाषा**
लोहेरा–लोहेरा पेलो मैना बेद्दा केरा	लोहरा लड़की मैंना ढुँढ़ने गयी
मैंना निम्हैं पेलो कोड़ानू रई	तुम्हारा मैंना तो ऐ लड़की घर के कोने में हैं
पइरी बारी पेलो मैंना बेद्दा केरा	सुबहके समय लड़की मैना खोजने गयी
मैंना निम्हैं पेलो कोड़ानू रई ।।	तुम्हारा मैना तो ऐ लड़की घरके कोने में है।।[१०]

फगुवा और झरियों के विवाह से सारा गाँव खुश है । करमा, गंदुरा ने अपने दोस्त के साथ, अच्छे विचार को उसे शाबाशी दी ।

४. **वसंत ऋतु के गीत :**

जल की बारिश होती है, आदिवासी लड़किया गीत गाने लगती है । रिमझिम बारीश होने लगती है तो युवतियाँ हंसती–खिलखिलाती दौड़ती है तो उधर खेतों में हलचलाते युवकों मे अलग ही अजीब मस्ती छायी हुई थी ।

युवतियों की टोली गीतों की कड़ियों में खोयी गीत गा रही हैं –

झारखण्डी भाषा	**हिंदी भाषा**
रसा – रसा चेप पुइयी	रसा – रसा बारिश हो रही
हैं रे भइयासिन एरा हूँ पोल्लोन	है रे में अपने भाई को देख भी नही सकती हूँ
पइरी री चेप पुंइयी	सबेरे से बारिश हो रही हैं
हैं रे भइयासिन चिन्हा हूँ पोललेन ।।	है रे में अपने भाई को पहचान नहीं सकती हूँ ।।[११]

इस प्रकार फादर पिटर पॉल एक्का के 'जंगल के गीत' उपन्यास में आदिवासी युवक–युवतियॉ त्योहार, पर्व, उत्सव, प्रेम और उत्सव समापन के गीत का चित्रण मिलता हैं । आदिवासी संस्कृति की अपनी अलग पहचान है । शिष्ट साहित्य से अलग और लोकसाहित्य में जहाँ भारत देश के सभी धर्मो जातियों की गीत आते है वहाँ आदिवासी लोकगीत विशेषत: झारखंड के आदिवासियों के लोकगीत अपनी अलग पहचान बनाते है । इसी की पहचान 'जंगल के गीत' में मिलती है ।

संदर्भ ग्रंथ :

१. लोक साहित्य – बापूसाहेब देसाई, पृ.७०
२. लोक साहित्य – बापूसाहेब देसाई, पृ.७४
३. जंगल के गीत – फादर पीटर पॉल एक्का पृ.८८
४. वही, पृ.१००
५. वही, पृ.१०६
६. वही, पृ.१२१
७. वही, पृ.१२५
८. वही, पृ.१२६
९. वही, पृ.१३१
१०. वही, पृ.१३६
११. वही, पृ.१६८